नौका - विहार

कविवर सुमित्रानंदन पंत छायावाद के वृहद् चतुष्टय कवियों में से एक हैं। अपनी समूची रचना - सामर्थ्य के साथ वह एक तरफ छायावादी काव्यांदोलन के प्रवर्तन में अपना सहयोग देते हैं, दूसरी तरफ अपनी रचना धर्मिता के वैशिष्ट्य के साथ कलात्मक एवं भावात्मक दोनों दृष्टियों से छायावाद की शिखर प्रतिष्ठा में अपना योगदान सुनिश्चित करते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावादी भावधारा की रचनाओं पर लिखते हुए सबसे अधिक महत्त्व सुमित्रानंदन पंत को दिया है जिसका मूल कारण यह है कि शुक्ल जी कविता में प्रकृति के आलंबन रूप के पक्षधर थे और पंत के यहाँ किंचित प्रकृति का काव्यात्मक संश्लेषण ही प्रधान रूप से रचनात्मक उत्कर्ष प्राप्त करता है। तब यह आकस्मिक नहीं है कि पंत को हिन्दी का वर्ड्सवर्थ कहा जाता है।

पंत की कविता 'नौका - विहार' उनके 'गुंजन' नामक काव्य - संग्रह में 1932 में प्रकाशित हुई थी। इस कविता को छायावादी काव्यधारा की प्रतिनिधि रचना भी माना जाता है। इस कविता में कवि ने प्रकृति के विविध चित्रों की सृष्टि करते हुए सर्वात्मवादी दर्शन के अनुसार ससीम की असीम के प्रति जिज्ञासा, परिवर्तनशील संसार में नित्य और वास्तविक जगत को पाने की आकांक्षा तथा चिन्तन और अनुभूति से सत्य का साक्षात्कार होने के पश्चात् उत्पन्न होने वाली आशावादी उल्लास का सुंदर वर्णन किया है।

यह कविता भाव एवं स्थापत्य

Kanak

कला की दृष्टि से छायावादी काव्य - कला के शिखर प्रमाण के रूप में स्वीकृत है। जैसा कि आत्माभिव्यक्ति छायावाद की प्रमुख विशेषता है, इस कविता को भी आत्मपरख कविता कहा जा सकता है जिसमें संस्मरणात्मक रंग - विधान दृष्टिगोचर होता है —

"चाँदनी रात का प्रथम प्रहर
हम चले नाव लेकर सत्वर!"

जहाँ आत्मपरखता का रंग होता है वहाँ गहन संवेदनशीलता भी दृष्टिगोचर होती है। स्पष्ट है 'नौका - विहार' में सघन अनुभूति की केन्द्रीयता दृष्टिगोचर होती है जो कि इसके गति विधान को पुष्ट करती है। छायावाद हिन्दी काव्य में मुक्त छंद लेकर आया और मुक्त छंद के अनुरूप ही भावों की मुक्ति तथा छंदों के बीच एक खास लोच का दर्शन होता है। 'नौका - विहार' में छंद की गतिमयता एवं बिम्बों के बीच इस गतिशीलता का सार्थक उपक्रम देखते ही बनता है —

"तापस बाला गंगा, निर्मल, शशि - मुख में दीपित मृदु करतल
लहरे उर पर कोमल कुंतल!"

चूँकि पंत जी अपनी काव्य - सर्जना के प्रथम चरण में प्रकृति के कोमल सौन्दर्य से अभिभूत दिखते हैं इसलिए उनकी भाषा में प्रकृति को लेकर सघन चित्रों का संयोजन स्वाभाविक है। शिल्प - विधान की दृष्टि से देखा जाए तो 'नौका - विहार' की महत्ता चाक्षुष एवं गतिशील बिम्बों तथा नादमयी भाषा के भी कारण है —

"सैकत शय्या पर दुग्ध - धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म - विरल
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल!"

गंगा का मानवीकृत इतना अनूठा बिम्ब पंत जी पहली बार लेकर आते हैं। पूरी कविता की महत्ता इस बात में है कि कवि ने 'नौका - विहार' संस्मरण को अपनी पूरी गतिशीलता में इतनी जीवंतता के साथ उभारा है कि जैसे कोई चित्रकार निहायत सुंदर लैण्डस्केप के गतिशील सौन्दर्य को पूरी नाटकीयता के साथ पकड़ रहा हो। इस कविता के केन्द्र में है - गंगा का सौन्दर्य - वर्णन, लेकिन इस वर्णन में इतिवृत्तात्मकता नहीं देखने को मिलती। गंगा का सौन्दर्य - वर्णन स्थिर न होकर गतिशील है, इसे ही प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण कहेंगे। मानो कवि पल - पल के सौन्दर्य - चित्र सौन्दर्य की पूरी ऊष्मा के साथ - साथ पकड़ रहा हो -

"गोरे अंगों पर सिहर - सिहर, लहराता तार तरल सुन्दर
चंचल अंचल सा नीलांबर!"

नौका - विहार करते समय गंगा का जो सौन्दर्य मूर्त हो उठता है उसमें एक तपस्विनी बालिका के रूप में विविध भंगिमाओं में गंगा का सौन्दर्य - वर्णन तो है ही साथ ही साथ चाँदनी, गंगा तट, कालाकाँकर का राजभवन, गंगा में स्थित द्वीप, क्षितिज पर विटप - माल, तिरती हुई नौका आदि संदर्भों को उनकी नाटकीय भंगिमा में चित्रित किया गया है। प्रकृति के प्रति हृदय की मुक्ति का उद्घोष करने वाली यह कविता मानो भौतिक जीवन की आंतरिकता और ऊब से मानवीय चेतना को प्रकृति के स्वच्छंद सौन्दर्य की ओर आकृष्ट कर रही है जहाँ महज कल्पना का

इयूटोपिया ही नहीं है बल्कि जीवन की सार्थकता का संधान भी है।

समूची कविता अंत में एक दार्शनिक दृष्टि में निष्पन्न होती है, यह शिल्प की दृष्टि से कविता की एक कमी है, लेकिन ध्यातव्य है कि छायावाद के उद्भव के मूल में जीवन और प्रकृति के बीच एक विशेष प्रकार का कौतूहल रहा है। यह रहस्यात्मक आस्वाद वर्ड्सवर्थ से लेकर रवीन्द्रनाथ टैगोर तक तथा पंत के काव्य तक सहज ही देखा जा सकता है। अंत में कवि शाश्वतता के जिस दर्शन तक पहुँचा है वह मानो मध्यकालीन नश्वरवादी दृष्टि का अतिक्रमण करते हुए आधुनिक कालीन जिजीविषा का प्रमाण हो जहाँ जीवन और जगत का सहज स्वीकार ही इष्ट है क्योंकि यह भी कहा जा सकता है कि कविता समर्थ एवं सशक्त कल्पना के माध्यम से एक रूमानी लोक की सृष्टि करती हुई यथार्थवाद की ओर संचरण करती है। गंगा की धारा-सा ही जीवन और जगत का विलास भी शाश्वत है, गति और संगम भी शाश्वत है, यही मानो कविता का संदेश है। शाश्वतता में किसी दर्शन को स्वीकार कर लेने की सुविधा ही निहित नहीं है अर्थात् कवि पर यह आरोप नहीं लगाया जा सकता कि वह सरलीकरण का शिकार है, बल्कि इस शाश्वतता के प्रतिपादन में जगत और जीवन की वे संभावनाएँ विद्यमान हैं जिनके लिए कोई भी सभ्यता संघर्ष करती है।

कवि ने इन पंक्तियों में जीवन के प्रति अपना दार्शनिक दृष्टिकोण व्यक्त

किया है और जैसा कि श्री शांतिप्रिय द्विवेदी का मत है – "'नौका - विहार' का उपसंहार प्रश्नात्मक है, एक उद्भट समीक्षक को कला की दृष्टि से यह असंगत जान पड़ा था किन्तु इसमें कवि के श्रद्धालु मन का भाव सहज उद्गार है, अतएव चित्रकार ने चित्र को बचकाना नहीं होने दिया है।"

जहाँ 'मायावाद' के चलते 'क्षणवाद' इतना हावी हो कि मानवीय चेतना सौन्दर्य का आस्वाद न कर सके और न ही जीवन और जगत की गति में निश्चिंत मन योगदान कर सके वहाँ के लिए वह सौन्दर्य परख रुझान अंततः कर्मवाद की ही निष्पत्ति प्रतीत होती है। पंत को गंगा की लहरों के शाश्वत विलास, नभ के शाश्वत विकास और चन्द्रमा के शाश्वत हास को देखकर जन्म - मरण के आर - पार विराट चेतना की याद आती है –

" हे नव - जीवन के कर्णधार ! चिर जन्म - मरण के
आर - पार,
शाश्वत जीवन - नौका विहार ! "

'नौका - विहार' के इर्द - गिर्द उठने वाला सौन्दर्य चित्र यहाँ व्यापक अर्थ प्रसार प्रकार जीवन नौका - विहार में परिणत हो गया। वैसे हर मनुष्य को जीवन रूपी नौका - विहार के आरंभ में सौन्दर्य और स्वप्न राशि दिखाई देती है लेकिन जैसे धीरे - धीरे नौका - विहार समाप्त हो जाता है वैसे ही जीवन भी विराम ले लेता है। यह गति शाश्वत है और मानवीय सभ्यता की इसी शाश्वत क्रम शृंखला में विकसित हुई है, यही किंचित् शाश्वत ज्ञान है। यदि व्यक्ति

अपने को और अपने समाज को अमरत्व प्रदान कर सकता है तो वह यही कि यह जीवन और जगत के शाश्वत विकास को समझे और उसमें अपनी सक्रिय भूमिका नियत करे। श्री यश देव के विचार के साथ हमें भी कहना चाहिए कि — "नौका - विहार' सबसे अच्छी कविता है, इसमें अनेक बहुत सुन्दर और आकर्षक चित्र हैं। यदि 'गुंजन' की सबसे अच्छी कविता कहा जाए तो उसे भी अतियुक्ति न होगी। इससे गंगा की क्षीण धारा, सैकत पुलिन, प्रतिबिंबित, तारांकित नभ, चंद्रिकोज्ज्वल गौरांगी गंगा, विकल कोक और नाव की छप - छप शब्द जैसे मूर्त हो उठे हैं।"